मुद्रकः
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
"जैनविजय" प्रि० प्रेस-सूरत।



प्रकाशक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
दि० जैन पुस्तकालय, चंदावाड़ी-सूरत।

प्रस्तावना।

इस विधानका प्रचार बुन्देलखंड मध्यहिन्दुस्थानमें विशेष है, और इसीका पाठ पढ़कर निर्वाणलाड़ू चढ़ाया जाता है।

इसके कर्त्ता कवि जगतरामजी कहाँके निवासी थे, और कौन कौनसे ग्रंथोंकी रचना की, इस बातका पता न लगा।

तीन प्रतियोंके आधारसे इसका संशोधन सावधानीसे किया गया है, तो भी अल्पज्ञता, प्रमाद और दृष्टि-दोषसे कई अशुद्धियाँ रहीं होंगीं उन्हें पाठकगण शोध-सँभालके पढ़ेंगे। यदि दूसरी बार छपनेका मौका आया तो पाठकोंकी सूचनानुसार वे अशुद्धियाँ दूसरी बारमें ठीक कर दी जायँगी।

त्रै० वि० में ॐ ह्रींके कई मंत्र भाषामें है, हमने कविकी कृतिको बिगाड़ना ठीक न समझ ज्योंके त्यों ही मंत्र रहने दिये है। यदि कोई भाई सस्कृतमें ही मत्र कहना चाहें, तो त्रैलोक्यसारकी गाथाओंके अनुसार मंत्र बनाकर पढ़ें। इसीलिये पाठकोंके सुभीतेके लिये गाथाओंके नम्बर दिये हैं। अंतमें निर्वाणकांड भाषा भी सामिल किया है।

कुन्दनलाल जैन,

चन्दावाड़ी–बम्बई नं० ४

आश्विन सुदी १२
वीर सं० २४४८।

सूची ।

१ श्रीवर्द्धमान निर्वाणपूजा	१
२ पीठकादि पूजा	८
३ वर्त्तमान चतुर्विंशति जिन–निर्वाणभूमि पूजा	१७
५ त्रैलोक्य जिनालय–विधान	६१
६ निर्वाणकांड भाषा (कविभैया भगवतीदासजी विरचित)	९०



शुद्धिपत्र ।

सूचना—पाठक निम्न अशुद्धियोंकी सुधारकर पढ़ें ।

पृष्ठ ७ पंक्ति पहली **तपादिक** के बदले **तृपादिक**, पृष्ठ १९ पंक्ति तीसरी **सर** के बदले **शव** और इसी पृष्ठकी पांचवीं पंक्तिमें **सर**के बदले **शव** पढ़ें ।

४

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः ।

स्वर्गीय कवि जगतरामजीकृत–

बृहत् निर्वाण-विधान

और

त्रैलोक्य जिनालय-विधान

१ श्रीवर्द्धमान निर्वाण पूजा ।

दोहा–प्रथम चरम जिन चरन जुग, नाथवंश वर पाय ।
सिद्धारथ त्रिसला तनुज, हमपर होहु सहाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अडिल छंद।

पुष्पोत्तर तज भवल, छठ जु अषाढ़की।
उतरा फागुन माहिं, बसे उर मायकी॥
अवधि अमरपति जान, रतन बरसाइयौ।
कुन्दनपुर हरि आय, सु मंगल गाइयौ॥ २॥

ॐ आषाढशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

दोहा।

दिवस पंच दस मास वसु, बरस पचत्तर सार।
रहे चतुर्थम कालके, वीर लगो अवतार॥ ३॥

सुन्दरी छंद।

सुकल चैत चतुर्दसिके दिना। नक्षत उतरा फागुन सुरगना।
साजि गजेन्द्र गिरेन्द्र न्हवाइयौ। न्हवि जिनेन्द्र सु मंगल गाइयौ॥४॥

दोहा।

पंचानन[1] पग चिन्ह तसु, तन उतंग कर सात।
बरन हेम[2] जिन बिम्ब नित, पूजहु भव्य प्रभात॥ ५॥

---

१ सिंह, २ सोना.

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदशीदिने जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अडिल छंद।

आयु बहत्तर बरस, कुँवरपद तीस जू।
सो लखि अथिर उदास भए जगदीस जू॥
तब लौकान्तिक देव, सु थिरकर थल गये।
रचि सुर तुरत नवीन, प्रभू सिविका[1] लये ॥ ६ ॥
पुरतैं निकट न दूर, मनोहर वन गये।
चन्द्रकान्ति मणिमई सिला लखि सुर ठये ॥
सिविकातैं पधराय, तहाँ सुरगन खड़े।
दुविधि परिग्रह त्याग, प्रभू समरस बढ़े ॥ ७ ॥

सुन्दरी छंद।

प्राची[2] दिसि सन्मुख, पद्मासन माँड़िकैं।
नमः सिद्ध कहि, पंचमुष्टि कच[3] काढ़िकैं ॥

---

१ पालकी, २ पूर्व दिशा, ३ बाल.

निज आतम सम, देव, सिवंग सब साख दै ।

त्रोदश विध चारित्र, धर्यौ अभिलाख है ॥ ८ ॥

मगसिर मास दसै सुदि, जनम नखत धरौ ।

ता दिन परम दिगंबर पद प्रभुजू धरौ ॥

साल विटप तर बैठि, बेर अपराह्निनी ।

दीक्षा सखी मिलाय वधू शिवदायिनी ॥ ९ ॥

दोहा ।

जिन शिर केश पवित्र अति, रतन पिटारे धार ।

क्षीरोदधि पधराय हरि[2]; निजथल गए नृतकार ॥१०॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

दोहा ।

तन ममत्व तजि विश्वपति, शिलापट्ट वर पाय ।

आरूढे तप धरत ही, चौथो ज्ञान उपाय ॥ ११ ॥

---

१ सिन्नोकी, २ इन्द्र.

अजर अमर अव्यक्त जो, अजपा ताको ध्याय ।
ध्यान सिद्धिके अर्थ प्रभु, अचल मेरु सम थाय ॥ १२ ॥

अडिल्ल ।

गुप्ति तीन गढ़[1] तुल्य भये तिनके महा ।
संजम बखतर तुल्य भए कठिना कहा ॥
कर्म-शत्रु जीतनकी रुचि लागी तबै ।
गुन अनेक सेना भट होत भए तबै ॥१३॥
अनशनादि तप धारि द्वादश माहिजी ।
ध्यान विषै सुविशेष शुद्धता पायजी ॥
अष्टावीस मूलगुन अग्रेसुर कढ़े ।
कर्म प्रबल अरि तिनहि जीतने प्रभु चढ़े ॥ १४ ॥

गीतिका छंद ।

चढ़े शुकल गजेन्द्र लेश्या, भूप अनुप्रेक्षा ढुके ।
धाय धर्म-कृपान[2] गहि, अरि मोहसेनापर झुके ॥

1 किला, 2 तलवार.

उत्कृष्ट निज परिनाम कष्टकतनी सु रक्षाकारनै।
वर ज्ञानरूप प्रधान अग्रेसुर कियो जगतारनै ॥ १५ ॥

अडिल्ल।

अति विशुद्ध परिणाम सेनपति छाइयौ।
रागादिक अरि प्रबल हनन उद्यम कियौ ॥
ध्यान जतन कर मूल प्रगट कर तंत्रके।
करे चलाचल वीर जिनेश्वर सत्रके ॥ १६ ॥
अधःकरनके भाव जो प्रथमहिं भायकैं।
हौं परनाम न अन्य क्षपक दिस जायकैं ॥
सुकल ध्यान अस प्रथम ध्याय ता करम लै।
मोह प्रबल करि घात जाय बारैम थलै ॥ १७ ॥

गीतिका छंद।

ता थलै दूजे सुकल बल त्रयै घातिया हनि जय लयौ।
चढ़ि तेरमें गुणस्थान श्रीजिन समोसरन विभौ ठयौ ॥

१ बारहवाँ क्षीणमोह गुणस्थान। २ ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय।

रचि कोट वेदी भूमिपर मध थंभ तपादिक (?) जहाँ।
जोजन प्रमान जु सोभ गी निरवान पद पूजत तहाँ ॥१८॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्या ज्ञानकल्याण प्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

छन्द भगवती।

करत विहार जिनेश भविक उपदेशते।
सकल संघ कर जुक्त धर्म तीर्थेश ते॥
नाना विधि अतिशय कर जुक्त प्रभू तहाँ।
आनि विराजे विपुलाचल पर्वत जहाँ॥ १९ ॥
जहँ दिव्यधुनि प्रति शब्द जय जय सभामंडप भवनमें।
धर्मोपदेश सो आइयो तिन निकट निर्वानक समै॥
तब सुर असुर नर इन्द्र करि अर्चित सिवग वर जानकैं।
पावापुरी उद्यान सार तहाँ पधारे आनकैं॥ २० ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं इत्युच्चार्य कर्णिकायां परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

२ पीठकादि पूजा ।

दोहा ।

महावीरने जा समै, गमन कियो शिवखेत ।
सोई समय विचारिकें, पूजौं सुधी स्वहेत ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं महावीर अतिवीर सन्मतिवर्द्धमानादिकानेकनामसयुक्तभगवज्जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् । आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरण ।

अष्टक ।

चौपाई ।

मंगल निर्वानक महावीर, प्रात समै पूजो भवि धीर ।
दस अतिशय जनमत जिन पाय, केवलग्यानमांहि दस गाय ॥
तिनि जिनवरप्रति चरनन ओर, दे जलधार जुगल कर जोर ।
मंगल निर्वानक महावीर, प्रात समै पूजौ भवि धीर ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीरजिनेंद्राय जन्मजरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

८

जिनके सुरकृत चौदह सार, ये अतिसै चौंतीस चितार ।
तिन जिनवरप्रति पूजनधारि, भ्रमर लुब्ध वर चंदन गारि ॥मंगल०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अष्ट प्रातिहारज जुत देव, जिनकी इन्द्र करैं सत सेव ।
तिन जिनवरप्रतिको अवलोक, ले वर शालि[1] अखंडित पोख ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

जिनके नंत चतुष्टय सार, ये गुन छयालिस हैं जग तार ।
तिन जिनवरप्रति पूजन सार, लेवर सुमन विविध परकार ॥ मं०

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

---

१ चाँवल

क्षुधा तृषादि आठदस दोष, हरत सिवग वर भवदधि सोष।
तिनि जिनवर प्रतिबिंब निहार, पूजनकों भरि नेवज थार ॥ मंग०
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

लोकालोक भेद जिन गाय, जीव अजीव तत्व दरसाय।
तिन प्रतिबिंब निरख निज हेत, दीपक लै निर्मल भवि चेत ॥ मं०
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

मिथ्या भ्रमकर भ्रमै अनादि, जगत जीव जगमें बहु वादि।
तिनको शिवगति सार बताय, तिनप्रति धूप दशांग चढ़ाय॥मं०॥
ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

जिनवृष उपदेसौ हितकार, चलो जात अघताई सार।
परमत खंडन मंडन लोक, तिनप्रति ले फल चरनन ढोक ॥ मंग०

१ धर्म.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जिनके समोसरनमें साध, चौदा सहस एकदस बाध ।
ऐसे जगत प्रभू पद पाय, लै जलादि पूजौं जिनराय ॥ मंगल० ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

राग विलावल ।

प्रकृति सात महावीर प्रभू, जिन प्रथम विदारी ।
तीन आठ जे भानिके, नव छत्तीस सिधारी ॥
दसमें लोभ द्वादसे सोलह तहाँ जु टारी ।
त्रेसठ प्रकृति खिपाइयो तिन जिन बलिहारी ॥ १ ॥

दोहा ।

सैंतालीस प्रकृति हनी, कर्म घातिया कीर ।
नाम तीनदस आयु त्रय, नाशि भये महावीर ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तायश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्व-पामीति स्वाहा ॥

जयमाला ।

दोहा ।

पंचै नामधर ते सुगुरु, पावापुर वन आय ।
शेष करम रिपु जीतने, शिव मग चलन उपाय ॥ १ ॥

छन्द मात्रिक ।

आये जहँ त्रिजगपति, ध्यान दीनो महा ।
त्रितिय पद शुकलं मांडो, सु हानी तहाँ ॥
तब प्रभु दिव्यधुनि, शब्द रहिते भये ।
अंतके दिवस बाकी, चतुर्दश रहे ॥ २ ॥
प्रभु गये उल्लंघि, तेर गुणस्थानतैं ।
चढ़ि अजोगे शुकल तुरियै पद ध्यानतैं ॥

१ वीर, महावीर, अतिवीर, सन्मति, वर्द्धमान । २ चौथे ।

१२

जोग सु निरोध करि चरम जुग समय जे ।
हनि बहत्तर चरम समय त्र्योदस जजे ॥ ३ ॥
चौदमें अंत सु अघातिया जय लई ।
चेतनाशक्ति दैदीप्य परगट भई ॥
भांति इह अष्ट अरि कर्म दल हनि गये ।
ऊर्ध्व जिन गमन कर शिवपुरी थिर भये ॥ ४ ॥
पक्षवर अमर, कार्तिक चतुर्दशि दिना ।
स्वातिवर नखत परभात समया गिना ॥
लोकके शिखर जिनदेव आरूढ़ियौ ।
सुख अनंतौ निरन्तर जहाँ पूरियौ ॥ ५ ॥
मोह अरि बीसवसु प्रकृति जुत क्षय कियौ ।
प्रथम क्षायकसम्यक्त गुन प्रगटियौ ॥
पंच भट सहित ज्ञानावरन चूरियौ ।
तब अनंतो दुतिय ग्यान गुन पूरियौ ॥ ६ ॥

दरशनावरन नव प्रकृति जुत दलमलौ ।
तब अनंतो सुदर्शन त्रितिय गुन मिलौ ॥
अंतराय जु करम पंच भट जुत हनौ ।
तब तुरिय वीर्य गुन जिन अनंतो बनौ ॥ ७ ॥

पद्धरी छन्द ।

इक तीव्रके भट जुत नाम मार, पंचम सूक्षम गुन प्रगट सार ।
बव कटक सहित कर आयु नाश, छठमा अवगाहन गुन प्रकाश ॥८॥
हनि गोत करमको जोर ताय, सातम जु अगुरु लघु गुन उपाय ।
जिन जुगल वेदनी घाति पाय, गुन अष्टम अव्याबाध थाय ॥ ९ ॥
इन आदि अनंते गुन समाज, पायौ प्रभु मुक्तिपुरी स्वराज ।
तब ही सुरेश बल अवधि पाय, निज सेन साज सब देव आय ॥१०॥
तादिन वह पुरी प्रकासरूप । दीपन समूह करके अनूप ।
धरती अकाश सब दिशानि मांहि, दीपकमाला प्रज्वलित लखाहिं ॥११॥

१ १३ प्रकृति ।

तब परमौदारिक प्रभु शरीर, मंगल पंचम लखि सुर गहीर।
सुभ गंध पहुप आदिक मनोग, वसु द्रव्यनिकर पूजा नियोग ॥१२॥
फिर चंदन अगरादिक लियाय, तब वर उतंग सुर सर (?) रचाय।
जिन तनें मंगलमय तहँ सचाय, तब अग्निकुमारन सीस नाय ॥१३॥
तिन मुकुटनि करि ज्वाला उठाय, भस्मीकृत सर (?) सब हो तहांय।
सब सुर जय जय कर तासु ओर, उर आनँद परम सु भक्ति सोर॥१४॥
तब प्रथम इन्द्र आदिक सुराय, कर भस्म वंदना सीस नाय।
कहते यह पुरुषोत्तम महान, वर धर्म तीर्थनायक सुजान ॥ १५ ॥
सो देखो अस्त भयो दिनेश, अब मिथ्यातम भ्रम कर प्रवेश।
ये प्रानी वृषतें विमुख होय, करके निज इच्छा मार्ग सोय ॥ १६ ॥
जगमें सु प्रवर्तेंगें विसाल, इमि पढ़िचत (?) सुरगन भक्ति माल।
अवनी पवित्र लखि अमरराय, पुनिकर पूजा निज थान जाय ॥१७॥
तादिनतें अब या भरत खेत, दीपकमाला[1] प्रगटी उपेत।
प्रति वर्ष भव्य पूजा कराय, निर्वान समय उत्सव सु पाय ॥ १८ ॥

१ दीपमालिका दीवाली।

१८

पाछे सुनि नर नारिन समाज, कर मोदक ले परिवार साज ।
अति आनँद मंगल निरत सोय, कीनो तिन अति ही कह सु कोय ॥१९॥
ते सन्मति मति दे अरज येह, तुम करुनासागर विमल मेह ।
भटके बहु काल अनंत यादि, तुम विन कृपालु जगमें अनादि ॥२०॥

अडिल ।

या भव-वनके मांहि, बहुत दुःख पाइयौ ।
जानो ग्यान प्रसाद, तुमहिं तट आइयौ ॥
तातें कहने मांहि, कछु आवे नहीं ।
वांछितार्थ पद तुम कर पाऊं प्रभु सही ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्तश्रीमहावीर जिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गीतिका छंद ।

या भांति निर्वानक सु पूजन, समयकी जो विधि कही ।
सो नय प्रमानके न्याय करि, भव्य तुम जानो सही ॥
यह समय लखि जिन पूज उत्सव, करत भक्ति जु वश सही ।
दुर्गति हरन सुख हेत भवि, करिये परम शुभि करम ही ॥ २२ ॥

१६

दोहा ।

तीन बरस वसु मास दिन, पंद्रह रहे सु सार ।
महावीर शिवपुर बसे, चौथे काल मझार ॥ २३ ॥

त्रिभगी छन्द ।

श्रीवीर जिनेसुर नमत सुरेसुर, वसु विधिकर जुग पद चरचं ।
बहु तूर बजावैं जिनगुन गावैं, ध्यावैं पावैं मुक्ति पदं ॥ २४ ॥

इत्याशीर्वादः ।

(जाप्यं १०८ अष्टोत्तरशतं दीयते) ॐ ह्रीं निर्वाणमंगलमंडितमहावीरजिनेन्द्राय नमः ।

---

३ वर्तमान चतुर्विंशति जिन-निर्वाणभूमि पूजा ।



दोहा ।

मंगलकारी सर्व जिन, दाता परम चितारि ।
फलद रचाकर चित्त हम, पूजत कर शिर धारि ॥ १ ॥

अडिल्ल ।

दीप अढ़ाई माहिं, मेरुवन सोभिते ।
पंच विदेह सु भूमि, तहाँ मन क्षोभते ॥

तिन माधि तीर्थंकर, मंगल सुखदायजी ।
होत सदा जहँ, इन्द्र जजैं सिर नायजी ॥ २ ॥

गीतिका ।

सिर नाय सुर गन खग नरेसुर, करें महोत्सव नित नये ।
परवार जुत भर पुण्य कोष, प्रतच्छ लखि श्रीजिन जये ॥
विहरंत केवल गनधरादिक, करत वर उपदेशते ।
तहँ सुनहि अति रुचि धारि–भविजन, त्याग गृह तप करहिं ते ॥३॥

अढिल ।

काल चतुर्थम सार, सदा वरतै जहा ।
यति श्रावक द्वय धर्म, चलै सास्वत वहाँ ॥
तीर्थाधिप चक्री, हल हरि प्रतिहरि घनै ।
उपजैं पुरुष अनूप, जहाँ शिवमग चनै ॥ ४ ॥

दोहा ।

जहाँ न मिथ्यामारगी, एक धरम अरहंत ।
इंद्रादिक आवें जहाँ, करें भक्ति भगवंत ॥ ५ ॥

१८

भरतैरावत दस विषैं, कालचक्र द्वय जोग।
तामधि जंबूद्वीप यह, दच्छिन भरत मनोग ॥६॥

अडिल्ल।

हम यह पंचम काल, पाय यह क्षेत्र सो।
विद्यमान तीर्थंकर, मंगल नाहि सो॥
तातैं परम उछाह, सु मन वचसौं रचौं।
सिद्धभूमि थल पाय, हरष पूजा सुचौं ॥ ७ ॥

(पूजनके समय पहरनेके आभूषण।)

गीतिका छंद।

मणिमुकुट कुंडल हार कंठी, दामै मुकतादिकतनी।
कर मांहि पहुँची कड़े मुंदरी, छुद्रघंटिक अति बनी॥
यज्ञोपवीत सो पाँय घुँघरू, आदि आभूषण घनै।
करि नव तिलक पट पहिर उज्ज्वल, चतुर नर पूजा ठनै ॥८॥

इत्युच्चार्य जिनचरणाग्रेषु परिपुष्पांजलिं क्षिपेत।

१ उत्सर्पणी अवसर्पणी, २ माला।

१९

अडिल्ल।

वृषभनाथ जिन आदि, वीर परयंत जी।
चतुर वीस इस क्षेत्र, भये भगवंत जी॥
कल्याणक तित सर्व, पूज्य हरि कर भये।
अब सिद्धालय माहिं, यहाँ जिन पूजये॥ १॥

ॐ ह्रीं वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत। संवौषट्। आह्वाननं अत्र तिष्ठत तिष्ठत। ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत। वषट्। सन्निधीकरणं।

अष्टक।

अडिल्ल।

कनक कलश दधि छीर, उदक निरमलहि लै।
इन्द्र जजैं इस सकति नाहिं वह जल मिलै॥
तृषा निवारन हेत, जजौं हितकारि अदा।
कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि केशर कुंकुम, जल सोहिलौ।
परस सुरंभि लहि भँवर, करहिं तापर किलौ ॥
भव आताप निवारन कारन आनदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

शशि मोती सम सालि, अखंडित वीनकैं।
परम सुगंधी उज्ज्वल, उत्सव चीनकैं ॥
अक्षयपदके हेत जजौं जिन चरनदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिक निर्वाणक्षेत्रेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

सुमन स्वर्णमय सुरतरुके, सम ल्यायकैं।
विविध प्रकार बनाय, सुगंध मिलायकैं ॥
मन्मथदाहि निवारि जजौं जिन पुष्पदा ॥ कैलाशादिक० ॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

---

१ सुगध। २ किलोल–आनंद।

घावर पुरी पिराक, तुरत घृतमें कढ़े ।
बहुत सुगंध लखत, उरमें आनँद बढ़े ॥
क्षुधानिवारन कंचन थार सम्हारदा ॥ कैलाशादिक० ॥
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

मणिमय कंचन जड़ित, दीप अति सोहनै ।
बहु सुगंध नाहिं धूम, लखत मनमोहनै ॥
तिमिरविनाशक दीपक लै पूजों सदा ॥ कैलाशादिक० ॥
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

चंदन अगर कपूर, आदि दस कूटकैं ।
सुरभिसार ओलि, मत्त जुरे कर टूटकैं ॥
करम दहनके हेत, धूप वर खेइदा ॥ कैलाशादिक० ॥
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

खारक दाख लवंग, लायची आनिये ।

१ भौंरा ।

श्रीफल वर बादाम, जायफल जानिगे ॥
ये फल दूषन रहित, सुफलि-फल देनदा ॥ कैलाशादिक० ॥
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

वारि सुगंध सुरत, पहुप चरु धोयके ।
दीप धूप फल वसु, विधि अर्घ सँजोयके ॥
गहि विधि अर्घ संजोय, स्वपर हित ज्ञानदा ॥कैलाशादिक०॥
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

तत्त वितत घन सुषिर, साजि बाजिन सबै ।
मंगलगीत उचारि, नारि नर मिल तबै ॥
सुचि कर सब सिंगार, करौं विधि तदा ॥ कैलाशादिक० ॥
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

गाथा ।

अट्ठावयम्मि उसहो, चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो ।
उज्जंते णेमिजिणो, पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥

अडिल्ल ।

अष्टापद आदीश, ईश जगतारजी ।
वासुपूज्य चंपापुर, परम उदारजी ॥
नेमिनाथ गिरनार, वीर पावापुरी ।
मुकति गमन इन थान, नमन तिन नितकरी ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं यथाक्रमसिद्धपदप्राप्तवासुपूज्यनेमिनाथमहावीरजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गाथा ।

वीसं तु जिणवरिंदा, अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा ।
सम्मेदे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

अडिल्ल ।

अजितनाथ जिन आदि, जिनेश्वर वीसजी ।
अमर असुरगन जिनपद, नावत सीसजी ॥
गिरि सम्मेदशिखरतें, लोकशिखर गये ।
तिनि जिनवर उर ध्याय, नाय सिर जय जये ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं सम्मेदाचलान्निर्वाणपदप्राप्ततीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

दोहा ।

शिवथल जन्मन मास तिथि, नाम सवानि सुखकार ।
वरनन सुरभि सु लुब्ध चित, भयो भ्रमर आकार ॥ १ ॥

पद्धरी छद ।

जय ऋषभदेव कैलाश सीस, वदि माघि चतुर्दशि मुकति ईस ।
चंपापुर द्वादशमें जिनेश, भादों सुदि पंचमि तिथि सुदेस ॥२॥
गिरनार नेमि जिन मुकतिथान, आषाढ़ सुदी आठें महान ।
पावापुरतें प्रभु वीरनाथ, कातिक वदि चौदस प्रनमि माथ ॥ ३ ॥
पुनि शिखर सम्मेद उतंग सीस, तहँ अति पवित्र वर कूट बीस ।
तिनके अब ग्रंथप्रमान नाम । भाषौं जिन मुक्तिकरन सुठाम ॥४॥
जय सिद्धकूट मन सिद्धि ठाम, जिन अजित लयो शिवनारि धाम ।
जय चैत्र शुकल पंचमि महेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ ५ ॥
जय धवलदत्त गिरि शोभनीक, जिन संभव शिवतिय वरी ठीक ।
जय चैत्र सुदी छठ दिन नरेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ ६ ॥

२५

जय आनँदकूट महा मनोग, लहि अभिनंदन शिवनारि जोग।
जय छठ वैशाख शुकल सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ ७ ॥
अय अचल नाम जयकूट सार, जिन सुमति भये भव-उदधि पार।
जय चैत सुदी ग्यारस महेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ ८ ॥
जय मोहनकूट समेद शीस, पद्मप्रभु मुक्त भये जगीश।
जय फागुन सुदि सातें नरेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ ९ ॥
जय वर प्रभासनामा सु कूट, तहँते सुपार्श्व प्रभु करम छूट।
जय फागुन सुदि सातें सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १० ॥
जय ललितकूट प्रभु परम ठाम, चंद्राप्रभु लहि तहाँ मुकतिधाम।
भादों सुदि वर सातें सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ ११ ॥
जय सुप्रभकूट पूँजं महेश, जय पुष्पदंत हम हर कलेश।
जय भादों सुदि नवमी सुरेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥१२॥
विद्युतवर कूट पावन थान, हनि शीतलप्रभु तहाँ कर्म मान।
आश्विन सुदि तिथि एका सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥१३॥

जय संकुलनामा कूट तास, श्रेयांस कियौ जग सीस वास।
श्रावन सुदि बारस कहि तिथेस, सम्मेदशिखर आये सुरेस ॥१४॥
जय वीर सु संकुल नाम तास, लहि विमल विमल पद ताहि पास।
जय सुदि अषाढ़ आठैं महेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १५ ॥
जय नाम स्वयंभू कूट वेश, शिवनारि अनंत वरी जिनेश।
सुदि मादश चैत महा सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १६ ॥
जय सीरीदत्त वर कूट जास, गति पंचम श्रीजिन धर्म पास ॥
अठि चैत अमावस तहँ नरेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १७ ॥
जय शांतप्रभासी कूट जेह, जिन शांति जगत शिवपुर वसेह।
जय जेठ अजर भू तिथि सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १८ ॥
जय कूट ग्यानधर सरस ठौर, प्रभु कुंथु भये त्रयभुवन मौर।
जय वदि वैशाख प्रथम दिनेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १९ ॥
जय नाटककूट समेद शीस, जय अरहनाथ हुव मुकति ईश।
जय चैत अमावस तिथि सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥२०॥

२७

जय संवलकूट पवित्र धाम, हनि मल्लि मल्ल कर्मन प्रमान ।
जय फागुन सुदि पंचामि प्रवेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ २१ ॥
जय निर्जरकूट पवित्र गाय, मुनिसुव्रत मुकति–वधू रमाय ।
फागुन वदि बारस सो दिनेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ २२ ॥
जय कूट मित्रधर परम ठाम, नमिनाथ पधारे मुकति धाम ।
जय सुदि वैशाख चतुर्दसेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ २३ ॥
जय कूट सुवर्नसुभद्र नाम, प्रभु पारस तजि सब जगत काम ।
जय सावन सुदि सातें खगेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश ॥ १४ ॥
शिवगमन समय इनको बखान, अनुक्रम लखि अंकाङ्कि नाम जान ।
जिन प्रथम द्वितिय चौथे जिनेश, पंचम सप्तम पसुमें प्रवेश ॥ २५ ॥
वसमें ग्यारम ये जगनदेव । पूर्वाह्न समय शिवमार्ग लेव ।
पुनि बारम तेरम चौदमीस, पोडस सत्रम उनईस बीस ॥ २६ ॥
बावीसम तेवीसम जिनेस, ये रात समय शिव कर प्रवेश ।
क्षितिए नवमं छठमे जिनुक्त, ये दिनके पिछले पहर मुक्त ॥ २७ ॥

२८

जय पंद्रम जिन जु अठारमेय, इकईसम वीर जिनेश सेय।
इनकी अरुनोदय वेल सार, जिन मुकतिवधू सँग मिलनकार ॥२८॥
जय वृषभ नेमि अरु वासुपूज्य, पद्मासन शिव लहि जगत सूज।
अवशेष ऊर्ध्व आसन प्रवीन, निर्वानपुरी जिन गमन कीन ॥२९॥

सोरठा।

मोह प्रबल गढ़ तोर, सकल करम रिपु मारियो।
लोक शिखरकी ओर, गमन कियो अविचल भये ॥३०॥

ॐ ह्रीं सिद्धपदप्राप्तवर्तमानजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रवार जो कोय, वंदे नर सुरपद लहै।
'जगतराम' हित जोय, सिद्धक्षेत्र पूजे सदा ॥ ३१ ॥

इत्याशीर्वादः।

(जाप्यं १०८ दीयते) ॐ ह्रीं वर्तमानकालसम्बधिचतुर्विंशतिजिनेन्द्राय नमः।

१ जिस तिथि और जिस समय जिस कूटसे जिन तीर्थंकर प्रभुने मुक्ति पाई है। उसी तिथिको उसी समय उसी कूटपर उन्हीं तीर्थंकर प्रभुकी प्रजा वन्दनाका यह उत्कृष्ट माहात्म्य बतलाया है।

पूर्वाह्ण समय।	रात्रिके समय	दिनके पिछलेपहर	सूर्योदयके समय
८ तीर्थंकर मोक्ष पधारे	९ तीर्थंकर मोक्ष पधारे	३ तीर्थंकर मोक्ष पधारे	४ तीर्थंकर मोक्ष पधारे
१ ऋषभनाथ	१ वांसुपूज्य	१ संभवनाथ	१ धर्मनाथ
२ अजितनाथ	२ विमलनाथ	२ पुष्पदंत	२ अरहनाथ
३ अभिनन्दननाथ	३ अनंतनाथ	३ पद्मप्रभ	३ नमिनाथ
४ सुमतिनाथ	४ शान्तिनाथ		४ महावीर
५ सुपार्श्वनाथ	५ कुन्थुनाथ		
६ चन्द्रप्रभ	६ मल्लिनाथ		
७ शीतलनाथ	७ मुनिसुव्रत		
८ श्रेयांसनाथ	८ नेमिनाथ		
	९ पार्श्वनाथ		

३०

४ प्रत्येक निर्वाण पूजा ।

दोहा ।

तीर्थंकर भगवानके, बंदौं पंच कल्यान ।
अतिशय ठाम मनोग सब, बंदौं सिर धरि पोन[1] ॥ १ ॥

ढार—('ते साधु मेरे उर बसो')

साधु जहाँ निज ध्यान धरि, पावें सु केवलग्यान ।
बंदौं सु ठौर प्रशस्त जो, तीरथ प्रधान जहान ॥ ते साधु० ॥
जा थान सो केवलपुरी, निरवान पहुँचे जान ।
पूजों सु थान पुनीत जो, जा सम सु थान न आने[2] ॥ ते साधु० ॥

ॐ ह्रीं वर्त्तमानकालसम्बन्धिजिनेन्द्राद्यसंख्यातमुनिभ्यः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। आह्वाननं । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । स्थापनं । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्। सन्निधीकरण ।

१ मस्तकसे हाथ जोड़कर, २ अन्य ।

अष्टक ।

(ढार कार्तिककी)

प्रानी उज्ज्वल जल मुनि चित्त सौं, भुंव सपरस बिन कर धार हो।
प्रानी हाटकें घट भर ल्याइये, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥
प्रानी सिद्ध-भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
भवि परम उछाह सुधारकें, जिन मुनिपद पूजनकार हो।
प्रानी सिद्धभूमि थल पायके ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक निर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

प्रानी चंदन सर सम सीतलो, वर केशर कुमकुम गार हो।
प्रानी भव आताप निवारिकें, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकं निर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो चदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

प्रानी कुंदकली समशालि ले, भर बीन अखंडित थार हो।
प्रानी आस अखैपद कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्रानी०॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

१ विना धरतीको छुआ हुआ, २ सोना।

प्रानी परम सुगंधी फूल ले, पुनि परख प्रछाल सो आन हो ।
प्रानी कामदहनके कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्रानी० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

प्रानी मोदक खाजे आदि जे, पकवान विविध मनहार हो ।
प्रानी कंचन थार संजोयके, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥प्रानी सि०॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशय क्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

प्रानी दीपक जोति सुहावनी, जिमि रतन अमोलक सार हो ।
प्रानी कर धरि परम उछाह सों, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्रा० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

प्रानी गंध सहित वर धूपले, पावक मँह खेवनसार हो ।
प्रानी अशुभ करम अरि जारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥प्रा०॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

प्रानी दाख लवंग सु लायची, पिस्तादिक आम अनार हो ।
प्रानी अजर अमरपद कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥ प्रा० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

प्रानी जल फलादि वसु द्रव्य ले, कर कनक रकेबी धार हो ।
प्रानी निरवांछिक जिन जोयकें, जिन मुनिगन पूजनकार हो ॥प्रा०॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

सोरठा ।

उत्तम भाव उपाय, श्रीजिन तीरथ वंदना ।
कीजें मन वच काय, नय प्रमानकें न्याय कर ॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

प्रत्येक अर्घ ।

गाथा ।

वरदत्तो य वरंगो, सायरदत्तो य तारवरणयरे ।
आहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

गीतिका छंद ।

वरदत्त और वरंग साहब, और सायरदत्तजी ।
इन आदि साढ़े तीन कोडी, मुनी हर दुख सत्तजी ॥

तास्वर नगर समीपतैं वसु, कर्म दहि शिवपद लयौ ।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर धार हम पूजन ठयौ ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवरदत्त—अनंगकुमारसायरदत्तादिपंचाशल्लक्षकोटित्रयमुनीनां निर्वाणस्पद-श्रीतारंगासिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गाथा ।

णेमिसामि पज्जुण्णो, संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो ।
बाहत्तरिकोडीओ, उज्जंते सत्तसया सिद्धा ॥

गीतिका ।

श्रीनेमिनाथ प्रद्युम्नजी अरु, संबुकुमर दयालजी ।
अनुरुद्ध मुनि इत्यादि जे, षट्–कायके रखपालजी ॥
सातसै बहत्तर कोडि मुनि, गिरनारतैं शिवपद लयौ ।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर धारि हम पूजन ठयौ ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ—प्रद्युम्न—शम्बुकुमार—अनुरुद्धादिमुनीनां सप्तशतकोत्तरद्वासप्तति-कोटिसंख्यानां श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

गाथा ।

रामसुवा वेण्णि जणा, लाडणरिंदाण पंच कोडीओ ।
पावागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

चौपई ।

जुगल रामसुत कर्मनि घात, लाड देस नृप आदि विख्यात ।
पाँच कोडि पावागिर सीस, मुकति गये वंदौं तिन ईस ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीरामचन्द्रस्य लाड़नरेन्द्रपुत्रद्वयादिमुनीनां पंचकोटिप्रमितानां निर्वाणास्पद श्रीपावागढ़सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

गाथा ।

पंडुसुआ तिण्णिजणा, दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
सेत्तुजयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तासिं ॥

छंद, मात्रा २० ।

पांडु सुत तीन नृप देश द्राविड़ सो तनै ।
आदि वसु कोडि मुनि तरन तारन भनै ॥

सीस सेतुंजयगिरितें परमपद लयौ ।
तिनहि हम मन वचनकर सु पूजन ठयौ ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीयुधिष्ठर–भीम–अर्जुनादिमुनीनां वसुकोटिप्रमितानां निर्वाणास्पदश्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

गाथा ।

संते जे बलभद्दा, जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
गजपंथेगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

छंद मात्रा २० ।

सात बलभद्र अरु नृपति जदुवंशिये ।
आदि वसु कोडि मुनि करम विध्वंसये ॥
सीम गजपथगिरितें परमपद लयौ ।
तिनहि हम मन वचन कायकर सिर नयौ ॥

ॐ ह्रीं श्री बलभद्रादिवसुकोटिप्रमितमुनीनां श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो. अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

३७

गाथा ।

राम हणू सुग्गीओ, गवयगवाक्खो य णीलमहाणीलो ।
णवणवदीकोडीओ, तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे ॥

ढार भरथरीकी ।

राम हनू सुग्रीवजी, अरु गवय गवक्ष नल अवर महानील जी ।
इन आदिक दक्ष, तेगुरु पूजौं भावसों जी, निन्यानवे कोडीऊ ॥
तुंगीगिरि शिवपद लेहऊ, तिनको कर जोडी, ते गुरु पूजौं भावसों जी ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीराम–हनूमन्तकुमार–सुग्रीव–सुडील–गव–गवाक्ष–नील–महानील–कुमारादि नवनवतिकोटिप्रमितमुनीनां श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

गाथा ।

णंगाणंगकुमारा, कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया ।
सुवणागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

चौपई ।

नंगानंग कुवर जुग भास, पाँच कोडि अरु लाख पचास ।
सिवनागिरि चढ़ि लहि भवतीर, तिनहिं नमन हम करत सुवीर ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीनंगानंगकुमारादिसार्द्धपंचकोटिमुनीनां श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

गाथा ।

दहमुहरायस्स सुवा, कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया ।
रेवाउहयतडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

चौपाई ।

दसमुख राय तने सुत और, साड़े पांच कोडि मुनि जोर ।
रेवानदी उभय तट पाय, शुकति गये वंदौं सिर नाय ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री रावणपुत्रादिसार्द्धपंचकोटिप्रमितानांमुनीनां निर्वाणास्पद श्रीरेवारोधोभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

गाथा ।

रेवाणइए तीरे, पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे ।
दो चक्की दह कप्पे, आहुट्ठयकोडिणिव्वुदे वंदे ॥

ढार 'ते साधु मेरे उर बसो' ।

रेवानदी तट भाग पश्चिम, सिद्धवर तहँ कूट ।

दो चक्रवार्ती अनंगै दस, तहँतैं करम अरि छूट ॥
इन आदि साढ़े तीन कोडि, मुनीश शिवपद पाय।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उरधार मंगल गाय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचक्रिवर्तिद्वयकामदेवदशकादिसार्द्धत्रयकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यो रेवानदीपश्चिमदिग्भागस्थसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

गाथा।

बडवाणीवरणयरे, दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे।
इंदजीद कुंभयणो, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

चौपाई।

बडवानी बडनयर सुहाई, दक्षिण भाग चूलगिरि गाई।
इन्द्रजीत घटकर्ण तहाँतैं, मुकति गये हम नमत यहाँतैं ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीइन्द्रजीतकुम्भकर्णयोनिर्वाणास्पदेभ्यो बडनगरबडवानीग्रामयोदक्षिणदिग्भागस्थचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

---

१ कामदेव। २ कुम्भकर्ण।

गाथा।

पावागिरिवरसिहरे, सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो।
चलणाणईतडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

गीतिका छंद।

वरनगर निकट उतंग परवत, नाम पावागिरि परो।
ताके समीप सु नदी चलना, नाम तट ताको धरो ॥
वर ध्यान मुनिवर चार सुवरन,-भद्र आदि महान जो।
लहि मुक्तिथान अनंत सुख, तिनकों त्रिकाल प्रनाम जो ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीसुवरणभद्रादिचतुर्णां मुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः पावागढ़शिखरेभ्योऽथवाचेलनानदीतटेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

गाथा।

फलहोडीवरगामे, पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे।
गुरुदत्ताइमुणिंदा, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

(ढाल परमादीकी।)

फलहोड़ी वर ग्राम, पश्चिम दिशिके माहीं।
दोनागिरिवर नाम, पर्वतके सिर ताहीं ॥

गुरुदत्तादि मुनीश, पंचमगति तहँ पाई।
तिनि मुनिकों कर जोर, पूजत अर्घ बनाई ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुरुदत्तादिमुनीनां निर्वाणास्पदश्रीफलहोड़ीबड़ग्रामपश्चिमदिग्भागस्थ-द्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

गाथा।

णायकुमारमुणिंदो, वालि महावालि चेव अज्झेया।
अट्ठावयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

ढार परमादीकी।

नागकुमार मुनिंद, व्याल महाव्यालजी।
छेद अभेद रिपिंद[1], तिन गुन-माल सुधार जी ॥
गिरि कैलाश महान, जु शिखरतें परनी।
शिवरमनी सुखकार, वंदत तिन नित करनी ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवाल-महावाल-नागकुमारादिमुनीनां श्रीकैलाशसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

१ ऋषियोंमें प्रधान।

गाथा ।

अचलपुरवरणयरे, ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे ।

आहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

छन्द पद्धरी ।

अचलापुरकी दिशि है ईशान, गिरि मेढशिखर धर परम ध्यान ।

आहूठकोडि मुनि मोक्ष पाय, तिनकों त्रिकाल हम शीस नाय ॥१४॥

ॐ ह्रीं सार्द्धत्रयकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यो अचलापुरग्रामस्य ईशानदिग्भागस्थश्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

गाथा ।

वंसत्थलवरणियरे, पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे ।

कुलदेसभूसणमुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

ढार जोगीरासाकी ।

वनसस्थलपुर निकट मनोहर, पच्छिम भाग दिशामें ।

नाम कुंथगिरि शिखर तहाँ वर, करम कुलाचल भाने ।

१ साढे तीन करोड़ ।

४३

कुलभूषन दिशभूषन स्वामी, परम दिगम्बर धारी ।
जोग निरोध परमपद पायो, तिनहिं प्रनाम हमारी ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुलभूषण—देशभूषणमुनीनां निर्वाणास्पदवंशस्थलगिरिपश्चिमदिग्भागस्थ-कुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

गाथा ।

जसरहरायस्स सुआ, पंचसयाइं कलिंगदेसम्मि ।
कोडिसिलाकोडिमुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

सुन्दरी छन्द ।

नृप जशोधरके सुत पाँचसै, सरस देश कलिंग विषैं लसै ।
रुचिर कोटिशिला मुनि कोटिजे, मुकति गये तिन्हें कर जोड़जे ॥१६॥

ॐ ह्रीं यशोधरपुत्रस्य कलिङ्गदेशीय पञ्चशतकभूपत्यादिकोटिप्रमितमुनीनां च निर्वाणास्पदकोटिशिलासिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

गाथा ।

पासस्स समवसरणे, सहिया वरदत्त मुणिवरा पंच ।
रिस्सिंदेगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥

४४

अडिल्ल ।

समोशरण वर सहित, पार्श्वजिनदेव जी ।
रेसंदीगिरि आये, पर्वत तेवजी ।
श्रीवरदत्त आदि मुनि,-राज तहाँ गये ।
निर्वानक ते साध, पूज त्रय जग यहे ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवरदत्तादिपञ्चऋषीश्वराणां निर्वाणास्पदश्रीरसनादेगिरि (नयनागिरि) सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

चौपाई ।

निःवृति जीवन जेह प्रमान, चतुरवीस जिन आदि बखान ।
दोसै साड़े चौदा कोड़ि, द्वादश शतक इक्यासी जोड़ि ॥ १८ ॥
और असंख्य परम ऋषिराज, लोकाशिखर लहि तजि जग काज ।
इस ही भरतक्षेत्रतें वीर, तिनहिं चितारि जजत हम धीर ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरादिद्वादशशतैकाशीत्युत्तरद्विशतसार्धचतुर्दशकोटिमुख्यमुनीनामन्येषां चासंख्यातमुनिवराणां सिद्धक्षेत्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१८॥

सुन्दरी छन्द ।

सरस गाथनके अनुसार जी, परम महा लघु वरननकार जी ।
अवर जिन शासन अनुसारजे, मुनि समूह जजौं उर धारजे ॥२०॥

दोहा ।

पाटलिपुरके निकटतें, सेठ सुदर्शन सार ।
पायो अविचल ठाम जहँ, सुख अनंत अविकार ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनश्रेष्ठिनः निर्वाणास्पदपाटलिपुत्रस्थारामसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १९ ॥

अडिल ।

जल गत थल गत सरित, उदधिगत जानिये ।
परवतगत सिद्धनिके, थोक प्रमानिये ॥
कुल गिरिवर गत नाभ, कुधर गत जीतये ।
कचंनागिरि गत जे, शिवलोकं विषै ठये ॥ २२ ॥
कुंड-द्रहनि गत, वन उपवन गत सार ये ।
गिरि गर्भनतें गत भव, एक सिधारये ॥

सब नरथलतें, शिवपद पायो सार जू।
सिद्धसमूह चितार जजौं, उर धारजू॥ २३॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वक्षेत्रसम्बन्ध्यनेकमुनिवराणां सिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२०॥

५ अतिशयक्षेत्र पूजा।

गाथा।

पासं तह अहिणंदण णायद्दहि मंगलाउरे वंदे।
अस्सारम्मे पट्टणि, मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि॥

गीतीका छन्द।

श्रीपार्श्वनाथ जिनेशकौ जिमि, त्योंहि अभिनन्दनहिंकौं।
आयो समवसृत मंगलापुर, शोभ सो कवि कहिय को॥
तातैं उभै जिन मंगलापुर, वंदि मन वच तन तहाँ।
आशारमे पट्टन विषै, समशरन मुनिसोव्रत जहाँ॥ १॥

१ मनुष्य लोकके।

४७

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाभिनन्दनयोः समवशरणास्पदमंगलापुरक्षेत्राय मुनिसुव्रतस्य समवशरणास्पदाशारम्यपट्टनक्षेत्राय चार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गाथा ।

बाहूबलि तह वंदामि, पोयणपुरहत्थिणापुरं वंदे ।
संती कुंथुव अरिहो, वाणारसिए सुपासपासं च ॥

ढाल सीमधरजीकी वंदनाकी ।

पोदनपुर बाहूबली वंदामी हो, शांति कुंथु अरनाथ ।
हस्तिनागपुर तीन जिन वंदामी हो, अष्टांगै नय माथ ॥
पुनि नगर बनारस विषैं हो, जिन पारस और सुपार्श्वजी ।
वंदहु त्रिविधि त्रिकाल भय हो, हरहु पीर कृपालजी ॥
भगवान ईश्वर सुगत विष्णू, श्रीजिन विपुल अपार जी ।
जिन नाम इन्द्र धरनेन्द्र चक्री, भक्ती करहिं महान जी ॥१॥

ॐ ह्रीं बाहुबलिचरणाश्रितपोदनपुराय, शांतिकुन्थु-अरहचरणस्पर्शितहस्तिनागपुराय, सुपार्श्वपार्श्वपदाश्रितवाराणसीक्षेत्राय चार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

गाथा ।

महुराए अहिछित्ते, वीरं पासं तहेव वंदामि ।
जंबुमुणिंदो वंदे, णिव्वुइपत्तोवि जंबुवणगहणे ॥

पद्धरी छद ।

मथुरा अहिक्षेत्र महाविशाल, महावीर पापूर्व व्वंदो त्रिकाल ।
जामुनके घेन तहँ वन सु ठान, शिव पाय जम्बु मुनिवर प्रमान ॥३॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथमहावीरचरणस्पर्शितमथुराहिक्षेत्राभ्यां जम्बूनाम्नोऽन्तिमकेवलिनो निर्वाणास्पदक्षेत्राय मथुरानिकटे यमुनावनाय च अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

गाथा ।

पंचकल्लाणठाणइं, जाणवि सॅजादमच्चलोयम्मि ।
मणवयणकायसुद्धी, सव्वे सिरसा णमॅस्सामि ॥

चौपई ।

इस वर मनुष लोकके माहि, पंच कल्यान ठाम जे पाहिं ।
सर्व तीर्थ मन वच तन ध्याय, ते थल पूजौं अर्घ बनाय ॥ ४ ॥

१ सघन—बहुतसे ।

ॐ ह्रीं अर्धद्वितीयद्वीपेषु सप्तत्युत्तरशतार्यक्षेत्रेषु यानि यानि पंचकल्याणक संयुक्त स्थानानि तेभ्यः सर्वेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

गाथा।

अग्गलदेवं वंदामि, वरणयरे णियडकुंडली वंदे।
पासं सिवपुरि वंदामि, होलागिरि संखदेवम्मि ॥

भुजंगी छंद।

वरनगर तीऊन कुंडन विषै, अग्गलदेव श्रीआदि देवानके नाथ हैं।
तिनहिं पग वंदि अरु पार्श्वजी वंदि पुनि, शिवपुर विषैं वंदि जोर हाथ हैं॥
और होलयगिरि नाम पर्वत जहाँ, संखदेवम्मि कहिये जगन्नाथ हैं।
संख वर चिन्ह संजुक्ति श्रीनेमिप्रभु, तिनहि पग वंदिकर जोर जुग हाथ हैं॥

ॐ ह्रीं आदिनाथपदाकितवरनगरक्षेत्राय, पार्श्वनाथपदाश्रितशिवपुरक्षेत्राय, शंख चिह्नसंयुक्तनेमिनाथचरणस्पर्शितहोलागिरयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

गाथा।

गोमटदेवं वंदामि, पंचसयं धणुहदेहउच्चत्तं।
देवा कुणंति वुट्ठी, केसरिकुसुमाण तस्स उवरिम्मि ॥

चौपई।

गोमटदेव शरीर ऊँचाई, धनुष पाँचसै, सुर बरसाई[1]।
ऊपर केशर कुसुम महान, वंदों तिनहिं जोर जुग पान ॥६॥

ॐ ह्रीं पंचविंशत्युत्तरपंचशतधनुःकायविराजितगोमटदेवपदाश्रितगोम्मटक्षेत्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

गाथा।

णिव्वाणठाण जाणिवि, अइसयठाणाणि अइसए सहिया।
संजादमिच्चलोए, सव्वे सिरसा णमँस्सामि ॥

सोरठा।

जे निर्वान सु ठाम, अतिशय ठाम मनोग जे।
पुनि अतिशय जुत ठाम, मध्य लोक सब तीर्थ नमि ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् मर्त्यलोके यानि निर्वाणक्षेत्राणि अतिशयक्षेत्राणि च संजातानि तेभ्यः सर्वेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

---

१ देवताओंने केशरकी वर्षा की।

५१

पाँच प्रकारके केवलियोंकी अर्चना।

हरिगीत।

सर्वज्ञ विश्व पदार्थ ज्ञायक, समोशरन जो अवनि तैं।
चउकाल अथवा इन्द्र गनधर, सभानायक प्रसन तैं॥
उचरंत दिव्यध्वनि अनक्षर, आदि अतिशय जहँ घने।
सातिशय[1]केवलि श्रीजिनेश्वर, तिनहिं हम पूजन ठने॥ ८॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनसुखवीर्याद्यनन्तगुणमण्डितेभ्यः सातिशयकेवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

ढाल जोगीरासाकी।

थिति उतकृष्टी कोटि पूरवमें, आठ बरस घट भाई।
बंध प्रकृति जे सर्व नाशि इक, सातावेदनि पाई॥
सत्त प्रकृति पचासीकी भनि, उदय बयालिस धारी।
लेश्या शुकल ध्यान पद त्रितिये, परमानँद पदकारी॥९॥

1—अतिशय सहित।

आठ लाख पुनि सहस अठानवे, पाँचसै दोय बखाने।
हैं उत्कृष्ट सजोगकेवली; तेरहवें गुन ठाने ॥
जहँ नव क्षायक लब्धि अधिक हो, दोष अठारह भाने।
सुरकृत गंधकुटी निर अतिशय,–केवलि जिन सो ठाने ॥१०॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाद्यनन्तगुणमण्डितनिरतिशयकेवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९

गीतिका छद।

सुरनर पशू करकें तथा, स्वयमेव ही प्रापति भयो।
अति घोर वीर महा उपद्रव, जीत केवलि–पद ठयो ॥
इक समयमें इक बार ही लखि, सकल लोक अलोकने।
उपसर्गकेवलि चरम तन धर, तिनहि हम पूजन ठने ॥११॥

ॐ ह्रीं उपसर्गप्राप्तये केवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

गीतिका।

उपसर्ग दुद्धर पाय अन्तमुहूर्तमें कर्म घातिया।
कर अंत केवलज्ञान ले पुनि, शेष कर्म विनाशिया ॥

५३

लहिं मुक्ति ज्ञानै अंतकृत–केवलि परमगुरु गुन भजैं।
जे एक तीर्थंकर समय जो होय दस दर्शन जजैं ॥१२॥

ॐ ह्रीं अन्तकृत्केवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

गीतिका।

जे ज्ञान पंचम धारि, पै उपदेश प्रभु नाहीं करें।
ते मूककेवलि जानि तिन, पूजन सकल भव अघ हरें॥
'यह कथन 'सामायिक सु पाटी' देख टीकाके विषैं।
धुनि और जैन विशेष श्रुत कर, ठीक बुधि इहठा लिखैं ॥१३॥

ॐ ह्रीं मूककेवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

जयमाला।

दोहा।

पंच परम जिन–गिरा[1], रत्नत्रय वृष येहि।
आचारादिक मुनि सबै, इन ही को प्रणमेहि ॥१॥

१ वाणी

ये पद सर्व प्रकार ही, पूजित लोक मँझार।
इनका विनय विचार कर, पुनि जयमाल उचार ॥२॥

पद्धरी छंद।

प्रनमामि परम गुरु नगनवंत, जे मूलोत्तर गुन धरन संत।
बावीस परीषह सहत शूर, गिरि शिर तरुतल सर तीर पूर ॥३॥
लखि जगत अथिर निजानंद मूल, सुख दुख तृन धन अरि मित्र तूलै[1]।
जिन आतम लीन विरक्त देह, जे मुक्ति-वधू उरवधर सनेह ॥४॥
जे दो विधि संजम धरन धीर, जे द्वादश तप तप तपत वीर।
जे त्रोदश विधि चारित्र धारि, ते साधु नमों उर गुन चितारि ॥५॥
जे मास दोय चव षट प्रजंते[2], कचलौच करें निज कर महंत।
जिनके व्रत मंत्रनतैं सु न्हान, जे धर्म शुकल ध्यावत सु ध्यान ॥६॥
जे शास्त्र कमंडलु मोरपिच्छ, महा कोमल तार खुलीर[3] तुच्छै[4]।
थुरभोंली शारद लगे न जास, संजम कारन राखैं जु पास ॥ ७ ॥

१ तुल्य-समान २ पर्यन्त तक, ३ ततु जुदे जुदे और हलके ४ कम मूल्यकी।

जे षट रस त्यागत लै अहार, उपशांत क्षुधा वृष काज सार ।
षट आवश्यक संजम सुपक्ष, वैयावृत पालन प्रान रक्ष ॥ ८ ॥
सिर नाभि प्रजंतन द्वार जेह, नहिं करत प्रवेश गृहस्थ गेह ।
जे अंतराय मल दोष टार, इक बार असन पख मासकार ॥ ९ ॥
जे कारन पंच न असन लेत, बलवृद्धि न काज न स्वाद हेत ।
तनबर्द्धन काज न देह कांति, नहि वर्द्धन आउ सदा जु शान्ति ॥१०॥
लखि अति उपसर्ग दया अभाव, अति रोग विषैं नहिं असन चाव ।
ब्रह्मचर्य भाव सन्यास माँहि, इन कारन लघु भोजन कराहिं ॥११॥
जे वीरासन खड़गासनीय, धनुषासन वज्रासन मुनीय ।
गोदोहन पद्मासन जु वीर, नाना विधि आसन धरनधीर ॥ १२ ॥
जिनके पन विधि स्वाध्याय चित्त, स्वाध्याय वाचना माँहि नित्त ।
जे चार सुधाता पायवेश, स्वाध्याय करें सब ही मुनेश ॥ १३ ॥
कर पग शुचिकर जलतें प्रक्षाल, धर पद्मासन कर नमसकार ।
जे शास्त्र उच्चार करें हमेस, मरजादा पूर्व सधै मुनेस ॥ १४ ॥

जे अवधि तुरियै[1] धर चरमै[2] ग्यान, इन धारक मुनि कहिये महान ।
पुनि राजऋषीश्वर ये चितार, अक्षीनविक्रियाऋद्धि धार ॥१५॥
जे बुद्धि-आपधी ऋद्धिवंत, ते परम ऋषीश्वर परम संत ।
जे देव ऋषीश्वर गगनगामि, जे परम ऋषी केवलि प्रमान ॥१६॥
दीपक चिरकाल तने जु सोय, मन-बल पुनि ज्ञान विशेष होय ।
संघैन[3] वर वैरागभाव, एकाविहारि मुनि गुन लखाव ॥ १७ ॥
जे द्वादशांग श्रुतज्ञान पाय, ताबल जुग श्रेणि[4] चढ़े सु धाय ।
जे चार ग्यानधर पन सुजेहिं, गुरु निकट न दीक्षा सीख देहिं ॥१८॥
प्राच्छित नामा तप माहिं जेहिं, गुरु कहिं ते माफिक दंड लेहिं ।
जे कथना विधिके धारि नेम, ध्यावत अध्यातम ध्यान जेम ॥ १९ ॥
जे कारन संघ कदाच साध, द्वादश योजन ताईं न बाध ।
आवे जो बरषाकाल माहिं, तो दोष लगे तिनको जु नाहिं ॥ २० ॥
जे दोष विशेष लग ज्ञान हानि, प्रायश्चित्त कर शुद्धि न ताहि जानि ।
तो संघ बाह्य मुनि काढ़ि देहिं, ज्यों नागबेलि दल गलत तेहिं ॥२१॥

१ चौथा मनःपर्यय ज्ञान २ केवलज्ञान ३ जिनका संहनन उत्तम होवे ४ उपशम और क्षपक श्रेणी

५७

जे तीन वरनै धर तन निरोग, वासी सुदेस निकषाय जोग।
इन्द्री सुपूर्ण पुनि पूर्ण देह, दिक्षा धर वर नर चिन्ह येह ॥ २२ ॥
जिनके जिन--वचनन सों उछाहि, सुनिये पुनि धारन ग्रहन ताहि।
सुविचारत तत्त्वस्वरूप भाव, जे दीक्षा धर नर गुन लखाव ॥ २३ ॥
कहुँ अवधिज्ञान बिन तुरिय ज्ञान, कहुँ मनपरजय विन अवधि जान।
मनपरजय अवधि विना ऋषीस, लहि केवलज्ञान समस्त दीस ॥२४॥
जे चढ़ि अजोग गुन थल विशाल, लघु पंचाक्षर उच्चरन काल।
लागे जो ता उन काल वास, तहाँ तिष्ठि सकल करि कर्म्म नास ॥२५
जे पंडित पंडित-मरनै पाय, इक समय विषै शिवलोक जाय।
ते गुरु गुन उरधर 'जगतराय', प्रणमै त्रिकाल नित शीष नाय॥२६॥

कवित्त।

रतनत्रय वृष क्षमा धीर्य धर, घने शास्त्र पढ़ि पायो पार ।
कुलवर तन मनोग बहु दिनके, दीक्षित मोक्षभिलाषी सार ॥

१ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य। २ समाधिमरण।

ज्ञान विराग भावना चउ जुत, इत्यादिक गुन लखि गनधार।
तिनको आचारजपद दे सब, संघनमें अरु अज्ञाकार ॥२७॥
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणमंडितऋषीश्वरेभ्यः पूर्णार्घं नि०

गाथा।

जो जण पढइ तियालं, णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए।
भुंजदि णरसुरसुक्खं, पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥

सुन्दरी छन्द।

पढ़हिं जे तिरकाल सुचाव सों, मुकतिकांड मनोहर भाव सों॥
भुगत सुरनरके सुख तापिछै, लहैं मोक्षपुरी सुख ते अछै[1] ॥ २८ ॥

इत्याशीर्वादः।

गीतिका छन्द।

श्रुति देव गुरु जिनबिम्ब जिनग्रह, द्रव्य तीरथ जे भने।
जिनग्रेह भूथल पंचमंगल, क्षेत्र तीरथ ये गने ॥

१ अक्षय।

५९

कल्यानकाल अरु सिद्धचक, व्रतादि तीरथकाल ये ।
जे रतनत्रय है भाव-तीरथ, ताहि नावत भाले[1] ये ॥२९॥

सोरठा ।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव तीर्थ ये चार हैं ।
शिथिलाचारादि टाल, धर्मरूप इन थल रहौ ॥ ३० ॥
इन थल पुण्य जु बंध हाम, जिमि सुवृष्टिको नाज ।
अघ इन थल बंधन कठिन, वज्रलेप न इलाज ॥ ३१ ॥

सखी छंद ।

निर्वान गिरा नहिं जानी, यह शारद ना पहँचानी ।
ताबिन शब्दारथ नाहीं, निशि दीप विना गृह माहीं ॥३२॥

इति निर्वाणभूमि समुच्चय पूजा समाप्त ।

---

१ मस्तक ।

६०

५ श्रीत्रैलोक्य जिनालय पूजा।

दोहा।

द्वीप अढ़ाईके विषैं, भये जिनंद अनंत।
हैंगे केवलज्ञानमय, नाथ अनंतानंत ॥ १ ॥
तिनकौं वंदन करि सदा, त्रिजग जिनालय जेह।
तिन सबकौ पूजन करौं, मन वच तन धर नेह ॥ २ ॥

गाथा (त्रैलोकसारकी)।

तिहुवणजिणिंदगेहे, अकिट्टिमे किट्टिमे तिकालभवे।
वणकुमरविंडगामरणरखेचरवंदिए वंदे ॥ १०१७ ॥

अडिल्ल।

तीन लोकके कृत्य, अकृत्य जिनाल जे।
इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र, नमावत भाल जे ॥
तिनकों वंदत जे, त्रिभुवन थिति गायकें।
तिन सबकों मैं वंदौं, शीस नवायकें ॥ ३ ॥

६१

दोहा ।

क्रीतम और अक्रीतमा, जिनप्रतिमा जिनग्रेह ।
तिन सबकौ पूजन करौं, धारौं धर्म सनेह ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंधिजिनालयेभ्यः अत्र अवतर अवतर संवौषट् । (इत्याव्हाननम्) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधीकरणम्)

अष्टक ।

सुन्दरी छन्द ।

उदक क्षीर समुद्र समान जी, कनक भाजनमें भर आन जी ।
हरषधार महा छविवंत जे, अक्रीतम जिनगाय अर्हं जजे ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलय-चन्दन गारि सु ल्यायकें । अति सुगंध रही महकायकें ॥हरष०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

६२

धवल शालि पखारि पिछानकें। रजत थार विषै भर आनकें ॥हरष०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

वर अनेक मनोहर फूल जे। तिनहिं लेय सुगंध संथूल जे ॥हरष०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यः कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

सरस नेवज थाल सॅंजोयकें। परम मूरति श्रीजिन जोयकें ॥ हरष० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दिपत दीपक रत्न सुहावने, जगमगाति सबै मनभावने ॥ हरष० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोकसम्बंधिअकृत्रिमजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

परम धूप दशांग सुवास ले। अलि समूह रहे झुक आश ले ॥हरष०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

---

१ बड़ी। २ देखकर।

६२

उक्त आगम जे फल सारजी। विविध भाँतिनके कर धार जी ॥हरष०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

सलिल आदिक लै वसु विधि सबै। विनयपूर्व प्रभू-दिशि ह्वै तबै ॥हरष०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

परम पावन सुन्दर सोहने। जगत जीव तने मनमोहने।
धने प्रतक्ष जजें लख ते जहाँ। हम परोक्ष त्रिकाल जजें यहाँ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०

प्रत्येक पूजा।

दोहा।

तीन लोकमें राजते, सदन अकृत्रिम जेह।
तिन सबको सामान्यकरि, व्याख्यादिक वरणेह ॥ १ ॥

१ कहे हुए। २ भगवानकी ओर। ३ वे धन्य हैं जो साक्षात् वंदना पूजन करते हैं।

गाथा ।

आयामदलं वासं, उभयदलं जिणघराणमुच्चत्तं ।
दारुदयदलं वासं, आणिद्दाराणि तस्सद्धं ॥ ९७८ ॥

अडिल ।

जिनगृह अचल मनोग, भुवनत्रयके विखै ।
उत्तम मध्यम, और जघन्य सबै अखै ॥
तिनकी अब लम्बाई, क्रमतें जानिये ।
जोजन शतक पचास, पचीस प्रमानिये ॥२॥

हरिगीतिका ।

जिनतें सु अर्द्ध प्रमान चौड़े, अब ऊँचाई तिन तनी ।
लम्बाइ चौड़ाई मिलायें, आध कर जोजन भनी ॥
त्रय भाँति जिनगृह द्वार गुरु, तिन उदय जोजन खास है ।
सो जान सोलह आठ चव, तिन अधिकरी यह व्यास है ॥३॥

१ लम्बाई चौड़ाईके जोड़से आधी ।

उत्कृष्ट मध्यम जघन चैत्यालय, न लघु द्वारानकी ।
इमि आध वसु चव दोय जोजन, व्यास इन आधानकी ॥
उत्कृष्ट मध्यम जघन जिनगृह, जान व्यासादिक भनो ।
क्रमतैं सु आधा आध जानहु, अब विशेष तिनो सुनो ॥४॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

गाथा ।

वरमज्झिमअवराणं, दलकमं भद्दसालणंदणगा ।
णंदीसरगविमाणगाजिणालया होंति जेट्ठा हु ॥ ९७९ ॥
सोमणसरुजगकुंडलवक्खारिसुगारमाणुसुत्तरगा ।
कुलगिरिगा वि य मज्झिम जिणालया पांडुगा अवरा ॥ ९८० ॥

चाल छंद ।

वर भद्रसाल सुखकारी, नन्दनवन सार निहारी ।
नंदीश्वर द्वीप मझारी, वैमानिक जान मँझारी ॥ ५ ॥
इन विषैं जिनालय सारे, उत्कृष्ट सबै सुखकारे ।
तहाँ पूजन सुरगन जाहीं, हम पूजत इह थल पाहीं ॥ ६ ॥

६६

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

सोमनस अरन मनहारे, कुंडलगिरि रुचकपहारे।
वक्षार कुलाचल सीस, पुनि इश्वाकार गिरीस ॥ ७ ॥
गिरि मानषोत्रके माहीं, मध्यम जिनधाम कहाहीं।
तहाँ पूजन सुरगन जाहीं, हम पूजत इस थल माहीं ॥८॥

ॐ ह्रीं सर्व मध्यमजिनालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पांडुकवन माँहि जिनालै, ते सर्व जघन्य कहालै।
तहँ पूजत सुरगन जाहीं, हम पूजत इस थल पाहीं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सर्वजघन्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

गाथा ।

जोयणसय आयामं दलगाढं सोलसं हु दारुदयं।
जेट्ठाणं गिहपासे आणिद्दाराणि दो दो हु ॥ ९८१ ॥

गीतिका छंद ।

तिन नींव जोजन आध-शत आयाम[1] जोजन सबनिकी।

1 लंबाई।

जोजन जु सोलह द्वार तुंग सु, द्वार सन्मुख दिशानिकी ॥
अरु जिनगृहनके दोउ पारसवनमें दो दो द्वार हैं।
छोटे बखाने फेर पीछे, द्वार नाहीं धार हैं ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्ट जिनालय जिनकी लंबाई १०० योजन, नींव आध योजन, बड़े द्वारकी दिशा सन्मुख अर सोला योजन ऊंची, और दो दो द्वार छोटे, दोनों पार्श्वन विषैं जिनालय पीछे द्वार नाहीं, ऐसे जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

गाथा ।

वेयड्ढजंबुसामलिजिणभवणाणं तु कोस आयामं ।
सेसाणं सगजोग्गं, आयामं होदि जिणदिट्ठं ॥ ९८२ ॥

हरिगीत छन्द ।

वेताढ्य जंबु कुरुह शाल्मलि, पर सु जिन गृह लेखिये।
तिनकी लँबाई कोस एक, प्रमान पुनि अवशेषिये ॥
वितरन भावन ज्योतिषी, इत्यादि जिनगृह-पाँति हैं।
जथा जोग तिनि आयाम, श्रीजिनदेव लखि बहु भाँति हैं ॥११॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्ट आदि विशेषण रहित जिनालयजिनविम्वेभ्योऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

गाथा ।

चउगोउरमणिसालति वीहिं पडि माणथंभ णवथूहा ।
वणधयचेदियभूमी जिणभवणाणं च सव्वेसिं ॥ ९८३ ॥

कवित्त ।

सर्व जिन सद्म चार द्वारनतें शोभनीक, मणिमई तीन कोटि लसत उतंग हैं ।
द्वारनकर जावेकी गली तिनमें एक एक, बीथी प्रति एक एक सो हैं मानथंभ हैं ॥
और नव नव [1]तूप फेरि तिन तीन कोट, बीच बीच अंतराल वाहि वन झूम हैं ।
द्विती तृती कोट बीच धुजायें फरहरात, तृती कोट चैत्यालय बीच चैतभूमि हैं ॥१२॥

ॐ ह्रीं सर्व जिन भवनके चार द्वार संयुक्त मणिमई तीन कोट, वीथी,प्रति मानस्थंभ, नव तूप, अशोक, सप्तच्छद, चंपक आम्र इन मई चार वनन मध्य तीन पीठकर संयुक्त मणिमई डाली, पान, फूलकर संयुक्त ऐसे चारों वनके मध्य प्राप्त जिनबिम्ब सहित चैत्यवृक्ष जिनविम्वेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

१ स्तूप ।

गाथा।

जिणभवणे अट्ठसया गब्भगिहा रयणथंभवं तत्थ।
देवच्छंदो हेमो दुगअडचउवासदीहुदओ॥ ९८४॥

सुन्दरी छन्द।

तिन जिनालयमें वसु एकसौ[1], गरभगेह बने सुख देतसो।
अरु तहाँ जिनमंदिर मध्यने, रतनथंभ सुवर्णमई घने॥ १३॥
जुगल जोजन चोड़िय है तिनै, आठ जोजन ऊंचाई भनै।
तुरिय जोजन ऊंचपनो गिने, देवच्छद छप्पर[2] सोहने॥ १४॥

ॐ ह्रीं गर्भगृहदेवच्छदछपरमंडपसंयुक्तजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

गाथा।

सिंहासणादिसाहिया, विणीलकुंतल सुवज्जमयदंता।
विद्रुमअहरा किसलयसोहायरहत्थपायतला॥ ९८५॥
दसतालमाणलक्खणभरिया, पेक्खंत इव वदंता वा।
पुरुजिणतुंगा पडिमा रयणमया अट्ठअहियसया॥९८६॥

1—एकसौ आठ। 2—मण्डप।

ढार मंगलकी।

सिंहासन छत्रादि, सहित प्रतिबिम्ब ते।
नीलवरन तिन केश, शिखापर शोभते॥
वज्रमई तिन दसन¹, ओंठ आरक्त हैं।
वर नवीन कोंपल समकर पद रक्त हैं॥ १८॥
ऐसे जिनेशाकार पुद्गलरूप आपाहिं परनये।
दस ताल मान प्रमान ताल, प्रमान द्वादश अँगुलये।
जिनराजवत विहसैक बोलैं, रिषभवत² तन मानिये॥
ते रतनमय शत आठ प्रतिगृह गर्भ इक इक जानिये॥१९॥

ॐ ह्रीं एकसौ आठ गर्भगृह तिनमें सिंहासनछत्रादि संयुक्त रत्नमय विराजमान एक एक जिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९॥

गाथा।

चमरकरणागजक्खगबत्तीसंमिहुणगेहि पुह जुत्ता।
सरसीए पंतीए गब्भगिहे सुट्ठु सोहंति॥ ९८७॥

१ दांत। २ ऋषभप्रभुके शरीरके बराबर-५०० धनुष।

सिरिदेवी सुददेवी सव्वाण्हसणक्कुमारजक्खाणं ।
रूवाणि य जिणपासे मंगलमट्ठविहमवि होदि ॥ ९८८॥

ढार मंगलकी ।

नागकुमार अरु जक्ष जुगल बत्तीस ते, एक एक गृहगर्भ खड़े समरूप ते ।
पंकतिबद्ध बरोबर सोहें जुदे जुदे, चौसठ तिनके चमर हस्त चित्रित खुदे ॥१७

खुदे तिनकर वीर्यवान, जिनेश पुनि पार्श्वन तनै ।
श्रीदेवि अरु सरसुती देवी यक्ष सर्वाणह कनै ॥
अरु यक्ष शनत्कुमार, इन चउ रूपके प्रतिबिम्ब हैं ।
यह प्रश्न—श्रीधनरूप सरसुति वानि, क्यों प्रतिबिम्ब हैं ? ॥१८॥

अडिल ।

(उत्तर)-श्रीदेवी सरस्वति दोऊ उत्कृष्ट हैं ।
तातें इनकी देवांगन आकृत्ति हैं ॥
बहुर यक्ष ये दोऊ भक्त विशेष हैं ।
तातें तिन आकार अनादि लिखेस हैं ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं नागकुमार और यक्षनके बत्तीस जुगल गर्भगृह प्रति खड़े चौसठ चँवर हैं कर जिनके, प्रतिमाओंके दोनों तरफ श्रीलक्ष्मी और सरस्वतीदेवी सर्वाण्ह शनत्कुमार यक्ष इन चित्रामोंकर युक्त जिनालयजिनबिम्वेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

गाथा।

भिंगारकलसदप्पणवीयणधयचामरादवत्तमहा।
सुवइठ मंगलाणि य, अट्ठहियसयाणि पत्तेयं ॥९८९॥

सुन्दरी छन्द।

निकट श्रीप्रतिबिम्बनके जहाँ, खचित अष्ट सु मंगल द्रव्य तहाँ।
गन अठोत्तर सौ इक जातकी, सरव मंगलद्रव्य सुहावती ॥२०॥

ॐ ह्रीं चमर छत्र कलश झालर सांथिया ठोना पंखा दर्पण इन अष्टमंगल द्रव्योंके चित्रोंकर संयुक्त जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(आगे गर्भगृहके बाहिरका स्वरूप कहते हैं।)

गाथा।

मणिकणयपुष्फसोहियदेवच्छंदस्स पुव्वदो मज्झे।
वसईए रूप्पकंचणघणसहस्साणि बत्तीसं ॥९९०॥

ढाल–जोगीराइसाकी।

मनि सुवरनमय पुष्पनि कर जुत, देवच्छदगृह सोहे।
ताके पूर्व विषै बसती जो, जिनमन्दिर मन मोहे॥
ताके मध्य विषै रूपामय, कंचन वर्ण घड़े हैं।
सहस बतीस अनादिनिधन ते, पृथिवी मॉहि धरे हैं॥२१॥

ॐ ह्रीं सोमक्रांत सुवर्ण रूपामय बत्तीस हजार घडे संयुक्त जिनालयेजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

गाथा।

महद्दारस्स दुपासे, चउवीससहस्समत्थि धूवघडा।
दारबहिं पासदुगे, अट्ठसहस्साणि मणिमाला॥ ९९१ ॥
तम्मज्झ हेममाला, चउवीसं वदणमंडवे हेमा।
कलसामाला सोलस, सोलसहस्साणि धूवघडा॥ ९९२ ॥

अडिल।

महाद्वार जो बड़े द्वारके पार्श्व दो, चौबिस सहस धूप घट पुनिमह द्वार दो।
ताहि पास दो ओर विषैं लूमे तहॉ, आठ सहस मनिमय माला झूमे वहाँ॥२२

गीतिका छंद ।

तिनि माल बिच बिच सहस चौबिस, माल सुवरनमय जहाँ ।
हैं बहुर तिन महिं द्वार आगे, सु मुखमंडप हैं तहाँ ॥
तिस विषैं कलश सुवर्णमाला, सोल सोलह सहस हैं ।
बहुरि सोलह सहस तिन मधि धूप घट महकहत हैं ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं बड़े द्वारके पार्श्वनमें द्वारके आगे मंडपमें धूप घटमाला संयुक्त जिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

गाथा ।

मुहुरझणझणाणिणादा, मोत्तियमणिणिम्मिया सकिंकिणिया ।
बहुविहघंटाजाला रइदा सोहंति तम्मज्झे ॥ ९९३ ॥

अडिल्ल ।

तिन सन्मुख मंडपके मध घंटा बड़े ।
मीठे झुन झुन शब्द, करें मोतिन जड़े ॥
किंकिन छोटी घंटि सहित बहु जुक्ति हैं ।
घंटन जुत्थ अनेक, सुरचना जुक्त हैं ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं घंटा आदि अनेक रचना संयुक्त अनेक जिनालयजिनविम्बेभ्योऽर्घं नि० ॥१४

(अब तिन मंदिरोंके छोटे द्वारोंका स्वरूप कहते हैं।)

गाथा ।

वसईमज्झगदाक्खिणउत्तरतणुदारगे तदद्धं तु ।
तप्पुरू मणिकंचणमालउचउवीसगसहस्सं ॥ ९९४ ॥

गीतिका छंद ।

जिन सदन दक्खिन अवर उत्तर, पार्श्वके मध्यम विषैं ।
तहँ द्वार छोटे जान यहँ पुनि, बड़े द्वारिनतैं लिखैं ॥
मणिमाल आदिकका प्रमान सु, पूर्वतैं आधा यहाँ ।
वसु सहस माला सदन पीछे, सहसैं चौबिस हैं तहाँ ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं बड़े द्वारोंसे मणिमाका आदिकका प्रमान यहाँ आधे छोटे द्वार संयुक्तजिनालय जिनविम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

द्वार मंगलकी ।

माला तो चौगिरद भींतके लूमती, घड़े रत्नमय ऊपर धूप सु घूमती ।

१ मणिमाला ८००० । २ सुवर्णमाला २४००० ।

घंटा मंडप बीच सु लूमत जानिये, इत्यादिक रचना जिनमंदिर मानिये।२६

मानिये कोट जु तीन वेदी, पाँच भूमि सु आठ ही ।
इत्यादि समोशरण विभूति, कहै पढ़ै जिन पाठ ही ॥
जो सुनन चाहि विशेष भविजन, तो त्रिलोक जु सार ही ।
सुन होहु हर्षित धनपती, काहिं नाहि पावत पार ही ॥२७॥

ॐ ह्रीं समवशरण अनादिनिधनस्थितअनेकरचनासंयुक्तजिनालयजिनविम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

ढाल–त्रिभुवन गुरुस्वामीकी ।

पुनि जे चैत्यालय जी, सामायिकवाले जी, तिनि आदि क्रिया करनेके थान है जी ।
हैं बंदन मंडप जी, तिन शोभ अखंडप जी, हैं अस्नान करनेके अस्थान बने जहाँ जी ॥
अभिषक सुमंडप जी, नगजडित महंडपजी, हैं नृत्य करनेके अस्थान सुहावने जी ।
नर्तन[1] वर मंडपजी, लखते अघ खंडप जी, अवलोक करनेके स्थान बने जहाँ जी॥२८॥
अवलोकन मंडपजी, जिनि शोभ अखंडप जी, गिरिक्रीड़ा करनेके गृह अस्थान हैं जी।

१ नृत्य करनेके ॥

श्रुतिभ्यासन थानक जी, सुगुनन गृह मानिक जी, विस्तीरण उत्तम पट चित्रामादि जी।
लखने वर स्थानक जी, पटिशाला मानिक जी, जिनकर संयुक्त जिनालय शोभिते जी॥३९

ह्रीं ॐ त्रैलोक्यसम्बंधी जिनमन्दिर सामायिकादि क्रिया करनेके स्थान संयुक्त जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१७॥

गाथा।

जिणसिद्धाणं पडिमा, अकिट्टिमा किट्टिमा दु आदिसोहा।
रयणमया हेममया, रूप्पमया ताणि वंदामि ॥ १०१९ ॥

अडिल्ल।

आकृत्रिम सु अनादिनिधन वपु परनये।
अरु कृत्रिम जी भविजीवन करते भये॥
रतननमय ते हेममई रूपामई।
अरहंतन अरु सिद्धनकी प्रतिमा कही॥
तिन बिम्बनको मैं बंदो थुतिकर अदा।
धनि जे जिय जो परतच्छ लखि पूजैं सदा ॥ ४० ॥

७८

ॐ ह्रीं जिनविम्बेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१८॥

गाथा ।

भवणेसु सत्तकोडी, बावत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा ।
भवणामरिंदमहिया, भवणसमा ताणिं वंदामि ॥ २०८ ॥

सुन्दरी छन्द ।

सात कोडि बहत्तर लाख ते, भवन तुल्य मनोहर भाखि ते ।
चमर आदि जजैं हर सारजे, भवनवासिनके जिनआगारजे ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं भवनवासी देवोंके सात कोडि बहत्तरलाख जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१९

।

णमह णरलोयजिणघर, चत्तारि सयाणि दोविहीणाणि ।
बावण्णं चउ चउरो, णंदीसर कुंडले रुचगे ॥ ५११ ॥

भुजंगी छन्द ।

मनुष्यलोकमें चारसै दोय घाटी, जिनालय नमो ते महा [1]सर्मपाठी ।
बहुरि लोक तिर्जग विषै दीप [2]आठी, प्रभू गेह बावन जजौं कर्म काटी ॥३२॥

१ आनन्द । आठवा द्वीप नन्दीश्वर ॥

कहै चार कुंडल गिरो पापहारी, बने ते नमों मैं परम भक्ति धारी।
बने गिरि रुचिकपै चार कर्महारी, जजैं सार सुन्दर सरस अर्घ धारी ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्र और त्रिजग क्षेत्रके चारसै अट्ठावन जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गाथा।

मंदरकुलवक्खारिसुमणुसुत्तररुप्पजंबुसामलिसु।
सीदी तीसं तु सयं चउ चउ सत्तरिसयं दुपणं ॥ ५६२ ॥

भुजगी छंद।

महामेरुनपै असी देव आलय, कुलाचल शिखर तीस सिर तीस छाजय।
गजदंत गिरि बीस पै बीस आलय, असा शिखर वछार गिरिपै जिनालय ॥३४॥
इष्वाकार चौ चारि मानपोत्तरालय, शतक एक सत्तर जु वैताढ्य गाजय।
देव उतर कुरु दस पै दस हैं जिनालय, मनुष्यलोकमें जिनगेह ये विराजय ॥३५॥

ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्रसम्बंधी तीनसै अठानवै जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२१॥

गाथा ।

तिण्णिसयजोयणाणं, कदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।
भौमाणं जिणगेहे, गणणातीदे णमंसामि ॥ २९० ॥

भुजगी छंद ।

जोजन महत तीन सैका किये वर्ग, जोजन भये सहस नव्वै सबेई ।
बहुरि एक जोजन सात लख और, अड़सठ सहस अंगुल होय तेई ॥
ऐसे सहस नव्वै करे जोजनोंके जिते होहि अंगुल त्रिरासिक करेही ।
सो ही वर्गरासिक तिनोंका गुनाकार, भागाहार सतती जगत्प्रतर देई॥२६

ॐ ह्रीं तीनसौ योजनके वर्गका भाग जगत्प्रतरको दिये जो प्रामानि होवे उसके संख्यातवें भाग प्रमान व्यंतरदेव संबंधी जिनमन्दिर गननातीत कहिये असंख्यात हैं लौकिक गिनती कर गिने न जाय, ऐसे कर पूर्वोक्त व्यन्तर प्रमानको संख्यातकी सहनांनी ऐसी कही, इतने जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२२॥

गाथा ।

बेसदछप्पण्णंगुलकदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।
जोइसजिणिंदगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ ३०२ ॥

८२

अडिल्ल ।

दोय शत छप्पन अंगुलके वर्गका, भाग जगत्प्रतरको दिये जो प्रमान का ।
ताके संख्यातवें भाग परमान है, असंख्यात जिनेन्द्र मन्दिर अभिराम हैं ॥३७॥

ॐ ह्रीं दोसै छप्पनका वर्ग पैंसठी सुच्यांगुलका वर्ग प्रतरांगुल सो पैंसठी प्रमान प्रतरांगुलका भाग जगत्प्रतरको दीजिये इतने ज्योतिष बिम्ब हैं सोई असंख्यात द्वीप समुद्र संबंधी सर्वज्योतिषी बिम्बनका प्रमान जान ऐसे जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गाथा ।

चुलसीदिलक्खसत्ताणउदिसहस्से तहेव तेवीसे ।
सव्वे विमाणसमणगजिणिंदगेहे णमंसामि ॥४५१॥

अडिल्ल ।

लाख चौरासी सहस सतानवे मानिये, तेइस सर्व विमान जिनालय जानिये ।
एक एक सुर जान जिनेश्वर थोक है, ऊर्ध्वलोकके भवन तिन्हें पगधोक है ॥३८॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकस्य चतुरशीतिलक्ष नवतिशतसहस्र त्रयोविंशतिविमानसंख्या इम सर्व जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२४॥

१ पैंसठ हजार तीनसो छतीस ॥

गाथा।

कोडी लक्ख सहस्सं अट्ठय छप्पण्ण सत्तणउदी य।
चउसदमेगासीदी गणणगए चेदिए वंदे ॥ १०१९ ॥

गीतिका छंद।

वसु कोडि छप्पन लाख सँतानवें सहस बखानिये।
चारसै इक्यासी सुलोकाकाश माँहि प्रमानिये ॥
इह भवनवासी आदि जिनगृह लोकमधि संख्या भनी।
ज्योतिषी व्यंतर भवन सम्बंधी असंख्याते तनी ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं लोकाकाशसम्बंधीसंयुक्तसमुदायरूपजिनालयेभ्योऽर्घं नि० ॥२९॥

गाथा।

णव कोडिय सया पनवीसा तेवन लाख सहस सत्तावीसा।
नवसै अवर अठाला जिनपडिमा अकट्टिमा वंदे ॥

सवैया तेइसा।

नौ सौ पचीस करोर तिरेपन, लाख हजार सत्ताइस गाये।
और कहे नव सै अड़तालि, त्रिलोक जिनालयके दरसाये ॥

ये प्रतिबिम्ब विराजत हैं, इक एक जिनालय सौ अठगाये।
जोर करे इकठे तिनको 'जगराम' नमें नित शीस नवाये ॥४०॥

ॐ ह्रीं अनंत सम्बंधी मंगलके अर्थ संख्याकर सयुंक्त जे त्रिलोक सम्बंधी जिनालयोंमें नौसे पच्चीस करोड त्रेपन लाख सत्ताईस हजार नौसे अड़तालीस श्रीजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२६॥

दोहा।

तीन भवनके सदन जिन, तिन प्रतिबिम्ब विशाल।
भवनन जुत प्रत्येक सब, वरनौं वर जयमाल ॥ १ ॥

जयमाला।

भुजगी छन्द।

जिनालय वहत्तर लाख सात कोड़ी, तहाँ आठसै बिम्ब तेतीस कोड़ी।
छिहत्तर कहे लाख सुन्दर सुहाये, नमों बिम्ब पातालके माथ नाये ॥२॥
प्रथम जम्बूद्वीप विषै जिनदिवाले, अठत्तर अक्रीतम महा शोभवाले।
सहस आठ शत चार चौवीस गाये, तहाँ बिम्ब राजे तिने सीस नाये ॥३॥

८४

दुती धातकीखंडके जिनगृहाले, अठावन अधिक एक शत विशाले।
सहस सत्र चौसठ तहाँ बिम्बदरसी, नमो हाथ धर माथ जिन गुन समरसी ॥४॥
तिरजंच धरा क्षेत्रमें चैत्य सोहैं, कहे दुगुन बत्तीस लख चित्त मोहे।
सहस षट शतक नव द्वादश वखाने, नमो हाथ धर माथ प्रतिबिम्ब जाने ॥५॥
असंख्यात व्यंतर विबुध ज्योतिषनके, जिनालय असंख्यात अविचल सबनके।
असंख्यात जिनबिम्ब राजै तिनोंमे, नमो हाथ धर माथ अरजी करो मे ॥ ६ ॥
प्रथम नर्क ते ऊर्ध्वगृह लख चुरासी, सहस संतानवें तेईस सर्व भासी।
प्रतिकोड़ि इक नव छिहत्तर लखासी, अठत्तर सहस चारसै अरु चुरासी ॥ ७ ॥
नदी सरस सीता सितोदा तडाग्रे, सहस शैल कंचन कहे तिन सिराग्रे।
अद्भुत महान सहस आनंदकारी, तिनोको जु अष्टांग वंदना हमारी ॥ ८ ॥
प्रथम भरत नरइन्द्र कैलाशकूटे, तहाँ बिम्ब निर्मापि अघपुन्द लूटे।
बहुर भव्य जीवन करे मध्यलोके, तिन्हे प्रात ही सदा नमें सुक्ख होते ॥९॥
महा एक सतक्षेत्र सत्तर जु मुक्ता, नमो पंचकल्यानक सार जुक्ता।
कहे कृत्य कृत्यं जिनालय त्रिलोकं, सबै बिम्ब राजे हदै धार धोकं ॥१०॥

अतीता अनागत कहे वर्त्तमानं, जिनेन्द्रादि रत्नत्रयं भूषितानं ।
जगतमें कहे सार तीरथ महानी, नमे सो 'जगतराम' अष्टांग आनी ॥१२॥

उक्त च ।

यावन्ति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिपरीत्य नमाम्यहम् ॥

अडिल्ल ।

जो इह पूजन सार करे अभ्यासने, सकल तीर्थकी वंदन कीनी तासने ।
रोग किलेश नशे धन धान्य जु आवहीं, अनुक्रमसों शिवराज परमपद पावहीं ॥१२॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्री त्रैलोक्यजिनालय पूजा समाप्त ।

स्तुति ।

दोहा ।

प्रणामि सुगुरु अरहंतपद, प्रणामि सिद्धवर देव ।
आचारज उवझाय णमि, प्रणमि साधु पद सेव ॥१॥

सुनयनानंद छंद ।

इन्द्र धरणेन्द्र नरइन्द्र जग ईशके, होय अनुचर धरैं छत्रत्रय सीसके ।
पंचकल्यान लहि घातिया जय लये, गणधरादिक जजैं परम हर्षित भये ॥२॥
ज्ञान दर्शन जुगल ये अनंते महा, ध्यान वर शुकल सो अनंते सुख लहा ।
वीर्ज सो अनंत लहते परमदेव जी, द्यो प्रभु श्रेष्ठ मंगल हमे सेवजी ॥३॥
जनम जर मरन ये प्रबल त्रय नग्र ते, ध्यानरूपी अग्निवान कर दग्ध ते ।
सास्वता सिद्धपद पाय गन सिद्ध ते, द्यो हमे पंचमो ज्ञान परिसिद्ध जे ॥४॥
ज्ञान दर्शन तपा वीर्ज चारित्र ये, पंच आचारके धार आचार्य जे ।
येहि पंचाग्निके साधवाले तपी, संघ मुनि ता विषे परम नायक जपी ॥५॥

८७

सम्यक्त रत्नादि गंभीर गुन धार है, अंग द्वादश श्रुतिज्ञान–दधि पार है।
सूर होते शिवगरूप लक्ष्मी यदा, द्यो हमें सरस्वती अंत रहिते सदा ॥ ६ ॥
घोर अति रौद्र दुख थान भयानक दिखै, जगतरूपीव जड–¹अरण तिहिके विषैं।
वदन विकराल नख कठिन तीक्षन दिखै, पापरूपी इसा सिंह जिहिके विषैं ॥७॥
मुक्तिरूपी सुगम पंथते भ्रष्ट है, मोह मिथ्या कुतप सेय अति कष्ट है।
इसे भावि जीव शिवमार्ग परकाशते, द्यो हमें श्रेष्ठ पाठक पठन पाठते ॥८॥
उग्र तप चरनकर अंग सोपित भया, धर्म अरु शुक्लजुग ध्यानमाही ठया।
भेद षट द्रव्य स्वरूप त्रयकाल जे, ज्ञान ध्यावत सु निज आतमलाल जे ॥९॥
जीव षट्काय रखपाल समभाव ते, करम वन दहन लहि परमपद ध्यावते।
बीस वसु मूलगुन धार ऋषिदेवजी, द्यो गुरू श्रेष्ठ मंगल हमे सेवजी ॥१०॥

घत्ता।

येही परम गुरू परमेष्ठी, ये ही सकल हितू सुखकारं।
ये ही उत्तम पुरुष जगतमें, ये ही मनवांछित दातारं ॥

१ अरण्य–जगल।

८८

ये ही मंगलमय मंगल कर, ये ही पंचमगति करतारं ।
इनके पदको भव भव शरनं, मागो परम जगतमें सारं ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं अर्हंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अडिल्ल ।

इहि प्रकार यह थुति है ताके काजको, पंच परम गुरु बंदौ नित प्रति साजकों ।
कठिन जगत वनवेल सु छेद लहाय जी, कर्म काठ दहि मुक्ति परमपद पाय जी ॥१२॥

इत्याशीर्वादः ।

अरुहा सिद्धाइरिया, उवझाया साहु पंचपरमेट्ठी ।
एयाण णमुक्कारो, भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥

दोहा ।

दोष रहित अरहंत गुण, सवतसरके[1] अंक ।
पौष अमरको[2] त्रोदशी, पूरन पढ़ौ निशंक ॥१३॥

इत्याशीर्वादः ।

(१०८ जाप देना चाहिये ।)

१ सवत् १८४६ । २ पौष वदि १३ ॥

८९

दोहा।

जो 'निर्वाणक विधि' सुने, तीरथ फल हो तास।
कार्त्तिक कृष्ण चतुर्दशी, भयो उदोत प्रकाश ॥१४॥
मन वच क्रम कर पूजहीं, अरु उपदेशें धर्म।
ते नर तीरथको लहैं, दास करे तिहि कर्म ॥ १५ ॥

इति निर्वानविधान।

कविवरभैया भगवतीदासजीरचित–

निर्वाणकांड भाषा।

दोहा–वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिर नाय।
कहूं कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय ॥ १ ॥

चौपाई १६ मात्रा।

अष्टापदआदीसुरस्वामि। वासुपूज्य चंपापुरि नामि॥ नेमिनाथस्वामी गिरनार।
वंदौं भावभगति उरधार ॥२॥ चरम तीर्थंकर चरमशरीर। पावापुरि स्वामी महावीर॥
शिखरसमेद जिनेसुर बीस। भावसहित वंदौं जगदीस ॥ ३ ॥ वरदतराय रु इंद मुनिंद।

सायरदत्त आदि गुणवृंद ॥ नगरतारवर मुनि उठकोडि । वंदौं भावसहित [1]कर जोड़ि ॥४॥
श्रीगिरनारशिखर विख्यात । कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात ॥ संबु प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय ।
अनिरुधआदि नमूं तसु पाय ॥५॥ रामचंद्रके सुत द्वै वीर । लाडनरिंद आदि गुणधीर ॥
पांच कोड़ि मुनि मुक्तिमझार । पावागिरि वंदौं निरधार ॥६॥ पांडव तीन द्रविड़ राजान ।
आठकोड़ि मुनि मुकति पयान ॥ श्रीशत्रुंजयगिरिके सीस । भावसहित वंदौं निशदीस ॥७॥
जे बलिभद्र मुकतिमें गये । आठकोड़ि मुनि औरहि भये ॥ श्रीगजपंथशिखर सुविशाल ।
तिनके चरण नमूं तिहूं काल ॥८॥ राम हनू सुग्रीव सुडील । गवगवाख्य नील महानील ॥
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान । तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान ॥९॥ नंग अनंग कुमार सुजान ।
पंचकोडि अरु अर्धप्रमाण । मुक्ति गये सिद्धनागिर सीसा ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस ॥१०॥
रावणके सुत आदि कुमार । मुक्ति गये रेवातट सार ॥ कोड़ि पंच अरु लाख पचास ।
ते वंदौं धरि परम हुलास ॥११॥ रेवानंदी सिद्धवरकूट । पश्चिमदिशा देह जहँ छूट ॥
द्वै चक्री दश कामकुमार । ऊठकोडि वंदौं भवपार ॥ १२ ॥ बडवाणी बडनयर सुचंग ।
दक्षिण दिश गिरि चूल उतंग ॥ इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण । ते वंदौं भवसायरतर्ण ॥१३॥

1 साढ़े तीन करोड़ ।

सुवरणभद्रआदि मुनि चार । पावागिरिवर शिखरमझार ॥ चलना नदी तीरके पास । मुक्ति गये वंदों नित तास ॥१४॥ फलहोडी बड़ गाम अनूप । पश्चिमदिशा द्रोणगिरिरूप ॥ गुरुदत्तादि मुनीसुर जहाँ । मुक्ति गये वंदों नित तहाँ ॥१५॥ बालि महाबालि मुनि दोय । नागकुमार मिलें त्रय होय ॥ श्रीअष्टापद मुक्तिमझार । ते वंदों नित सुरत सँभार ॥१६॥ अचलापुरकी दिशा इशान । तहां मेढगिरि नाम प्रधान ॥ साढ़ेतीन कोड़ि मुनिराय । तिनके चरन नमू चित लाय ॥१७॥ वंशस्थल वनके ढिग होय । पश्चिमदिशा कुंथुगिरि सोय ॥ कुलभूषण दिशभूषण नाम । तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥१८॥ दसरथराजाके सुत कहे । देश कलिंग पांचसौ लहे ॥ कोटि शिला मुनि कोटिप्रमान । वंदन करूं जोर जुगपान ॥१९॥ समवसरण श्रीपार्श्वजिनद । रेसंदीगिरि नयनानंद ॥ वरदत्तादि पंच ऋषिराज । ते वंदों नित धरमजिहाज ॥२०॥ तीन लोकके तीरथ जहाँ । नितप्रति वंदन कीजे तहाँ ॥ मन वच कायसहित सिरनाय । वंदन करहि भविक गुण गाय ॥२१॥ संवत सतरहसौ इकताल । अश्विनसुदि दशमी सुविशाल ॥ 'भैया' वंदन करहि त्रिकाल । जय निर्वाणकांड गुणमाल ॥२२॥

इति निर्वाणकाण्ड भाषा ।